महत्वपूर्ण एवं खास

उनके निवाले को हवाले विरासत

एक औद्योगिक समूह को पच्चीस करोड़ रुपये में दिल्ली के लालकिले के रखरखाव का पांच साल का ठेका मिला है। लालकिला इस समूह के नाम से जुड़ जायेगा पांच साल के लिए। डालमिया लालकिला क्योंकि डालमिया समूह को पांच साल का ठेका मिला है। कुछ भारतीयों को इससे तकलीफ पहुंच सकती है कि हाय राजसत्ता के प्रतीक लालकिले को प्राइवेट सेक्टर को क्यों दे दिया। हम भारतीय भ्रमित रहने वाले लोग हैं, लालकिला चौपट हो जाये। टूट ही जाये तो कोई आफत नहीं है। पर प्राइवेट सेक्टर के हाथों में न जाना चाहिए कुछ भी। सरकार चौपट करे, कुछ तो इसमें जनता की इच्छा शामिल होती है। पर निजी सेक्टर के हाथों में कुछ न चौपट होना चाहिए क्योंकि वहां मुनाफाखोर शोषक हो जाता है।

पहले हम सरकारी फोन कंपनियों के हाथों चौपट होते थे, अब निजी सेक्टर की कंपनियों के हाथों लुटते हैं। पहले सरकारी फोन चलते ही नहीं थे, मिलते ही बहुत मुश्किल से थे। अब फोन चलें या न चलें, बिल चलते जाते हैं धड़ाधड़। विकल्प है आपके पास, इससे परेशान न होना, तो उससे होइये।

लालकिला डालमियाजी का हुआ। जनसुलभ बीड़ी अगर सबसे ज्यादा रकम देगी तो ताजमहल का नया नाम जनसुलभ बीड़ी ताजमहल हो जायेगा। ताजमहल चाय वाले अगर सबसे ज्यादा रकम दे गये, तो हुमायूं के मकबरे का नया नामकरण ताजमहल चाय हुमायूं मकबरा हो सकता है। हुमायूं कब्र में करवटें बदलते हुए सोच सकते हैं कि हमारे ही खानदान के एक बच्चे द्वारा बनायी गयी इमारत का नाम हमारे मकबरे के नाम के आगे क्यों लगा दिया है। उन्हें सुनना पड़ सकता है, ये शाहजहां का ताजमहल नहीं है, यह तो ताजमहल चाय वाला ताजमहल है। शाहजहां का ताजमहल तो खुद ही स्पांसर की तलाश में है। उसे बैगपाइपर की स्पांसरशिप मिल जाये तो ताजमहल का नाम बैगपाइपर ताजमहल हो सकता है। बस जोन्सन एंड जोन्सन डाइपर ताजमहल न हो जाये, मतलब प्यार वगैरह का फील कुछ देर के लिए स्थगित हो जायेगा, डाइपर की सुनकर।

पर चिंताएं दूसरी हैं। अधिकाधिक मुनाफे के चक्कर में लालकिले पर पर्यटकों को हर तरीके से खींचने की तरकीबें न आजमा ली जायें। प्राइवेट सेक्टर के पास बहुत तरकीबें हैं रकम खींचने की। यूं न हो कि अगर ताजमहल बैगपाइपर ताजमहल हो जाये तो हर दर्शक के लिए कंपलसरी हो जाये बैगपाइपर ख़रीदना। किसी ब्यूटी क्रीम को मिल जाये स्पांसरशिप ताज की तो हर दर्शक को ब्यूटी क्रीम न खरीदनी पड़े। कोई बुजुर्ग दर्शक कह सकता है कि मेरी तो उम्र हो ली, अब क्या करूंगा ब्यूटी क्रीम खरीदकर। पक्का जवाब उसे यह दिया जायेगा, शाहजहां भी बुजुर्ग था, वह बुजुर्ग होकर ताजमहल बनवा सकता है तो तुम बुजुर्ग होकर ब्यूटी क्रीम क्यों न खरीद सकते।

वैसे सवाल में दम है।

सख्ती से थमेंगे स्कूल बस हादसे

लापरवाही से चलाई जा रही स्कूली बसों के दिल्ली और उत्तर प्रदेश के कुशीनगर सहित कुछ स्थानों पर दुर्घटनाग्रस्त होने के कारण पिछले सप्ताह कई मासूमों की जान चली गयी। इसमें बड़ी संख्या में बच्चे जख्मी हो गये। इसके बाद, हमेशा की तरह सरकार और प्रशासन सारे मामले की जांच का आदेश देकर अपनी जिम्मेदारी से मुक्त होने के प्रयास में जुट गये हैं।

ऐसा लगता है कि स्कूल प्रबंधन, यातायात पुलिस और परिवहन विभाग स्कूली बच्चों की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए स्कूली बसों के चालकों के बारे में उच्चतम न्यायालय के 1997 के दिशा निर्देशों को पूरी सख्ती से लागू ही नहीं करना चाहते। इसका नतीजा सामने है कि अनेक मासूमों के जान गंवाने तथा बड़ी संख्या में छात्रों के जख्मी होने की खबरें आती रहती हैं।

सवाल यह है कि स्कूली बसों के पुल से नीचे गिरने, मानव रहित रेलवे क्रॉसिंग पर ट्रेन से टकराने, रेड लाइट का पालन नहीं करने, बस के खाई में गिरने, बस पीछे करते समय टक्कर हो जाने जैसी घटनाओं के लिए कौन जिम्मेदार है? क्या अकेला स्कूल बस चालक या फिर पर्याप्त अनुभव नहीं रखने वाले चालक को नौकरी देने वाला स्कूल प्रबंधन या यातायात पुलिस और परिवहन विभाग या फिर सभी समान रूप से दोषी हैं?

इस तथ्य से इनकार नहीं किया जा सकता कि अधिकांश निजी और पब्लिक स्कूल कम से कम पैसे में ठेके पर स्कूल बस चालक रखने का प्रयास करते हैं। अधिकांश चालक स्कूली बसों को तेज रफ्तार के साथ खतरनाक तरीके से चलाते ही नहीं हैं बल्कि कई मामलों में इयर फोन लगाकर गाने सुनते रहते हैं या फिर मोबाइल पर बातें करते नजर आते हैं।

यह बेहद चिंता की बात है कि करीब 21 साल पहले उच्चतम न्यायालय ने स्कूली बसों के परिचालन के संबंध में विस्तृत आदेश दिया था। लगता है इसी उदासीन रवैये का नतीजा है कि बच्चों को ले जाने वाली स्कूली बसों के ड्राइवर अक्सर लापरवाही से बस चलाते हैं। उत्तर प्रदेश के कुशीनगर में पिछले सप्ताह हुई हृदय विदारक घटना के बारे में बताते हैं कि बस चालक अपनी ही धुन में कान में इयर फोन लगाकर स्कूल बस चला रहा था। नतीजा अनेक मासूमों की जान चली गयी। एक बात तो निश्चित है कि स्कूली बसों के इस तरह से दुर्घटनाग्रस्त होने के मामलों में स्कूल प्रबंधन, यातायात पुलिस और परिवहन विभाग अपनी जिम्मेदारी से बच नहीं सकते।

उच्चतम न्यायालय ने 16 दिसंबर, 1997 को शिक्षण संस्थाओं में छात्रों की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए बच्चों को लाने और ले जाने वाली बसों और उनके चालकों के बारे अनेक महत्वपूर्ण निर्देश दिये थे।

न्यायालय ने स्पष्ट शब्दों में कहा था कि शिक्षण संस्था की अपनी और किराये पर ली गयी किसी भी बस के लिए ऐसा चालक नहीं रखा जायेगा, जिसके पास भारी वाहन चलाने का पांच साल से कम का अनुभव होगा। इसी तरह, रेड लाइट पार करने, अनुचित तरीके से वाहन खड़ा करने, सुरक्षित लाइन में वाहन चलाने के नियम का उल्लंघन करने और अनधिकृत व्यक्ति को वाहन चलाने देने के अपराध में एक साल में दो बार से अधिक चालान या फिर नशे की हालत में खतरनाक तरीके से वाहन चलाने या फिर भारतीय दंड संहिता की धारा के तहत उसका एक बार भी चालान हुआ हो तो भी स्कूली बस चलाने का काम नहीं दिया जायेगा।

न्यायालय ने कहा था कि शिक्षण संस्थानों की बसों के सभी चालक अलग से पहचान सकने वाली वर्दी पहनेंगे।

न्यायालय ने तो पुलिस और परिवहन विभाग को यह निर्देश भी दिया था कि वे शीर्ष अदालत के आदेश में समाहित निर्देशों का समुचित प्रचार करेंगे। ऐसा लगता है कि पुलिस और परिवहन विभाग की तुलना में शिक्षण संस्थान अपनी बसों और किराये पर ली गयी बसों के चालकों के बारे में अधिक ढुलमुल रवैया अपनाते हैं।

ऐसे में जरूरी है कि पुलिस और परिवहन विभाग स्कूली बसों के खिलाफ व्यापक अभियान चलायें और यह पता लगायें कि क्या बसों की स्थिति ठीक है? क्या इनके चालकों के पास वैध लाइसेंस और अनुभव है और क्या वे उचित यूनिफार्म पहने होते हैं? अगर जांच में पता चलता है कि बस चालकों को यातायात नियमों की जानकारी नहीं है और उनके पास भारी वाहन चलाने का लाइसेंस और पर्याप्त अनुभव भी नहीं है तो ऐसे चालकों की सेवाएं लेने वाले स्कूलों और इनके प्रबंधकों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जानी चाहिए। स्कूली बच्चों की सुरक्षा के साथ खिलवाड़ करने वाले स्कूलों और इनके प्रबंधकों के खिलाफ कठोर कार्रवाई के बगैर इनकी अपनी बसें और किराये पर ली जाने वाली बसों के परिचालन और इनके चालकों के लिए निर्धारित न्यायिक दिशा-निर्देशों पर सख्ती से अमल संभव नहीं है।

पुण्यदायक धन

एक बार देवराज इंद्र आचार्य बृहस्पति के सत्संग में पहुंचे। वहां देवी लक्ष्मी की महिमा की चर्चा होने लगी। आचार्य बृहस्पति ने कहा, मां लक्ष्मी जिस पर कृपा करती हैं, वह धनवान और समृद्ध बन जाता है, किंतु यह ध्यान रखना चाहिए कि धन-संपत्ति का उपयोग सदैव सद्कार्यों के लिए करना चाहिए। देवराज इंद्र ने पूछा, आचार्यश्री, धनाढ्य को किन-किन सद्कार्यों पर धन का उपयोग करना चाहिए? आचार्य बृहस्पति ने बताया, लोकोपकार के कार्यों पर धन खर्च करना ही उसका सदुपयोग है।

आचार्यश्री ने कहा, धर्मशाला, देवालय, विद्यालय, अनाथालय, चिकित्सालय जैसे लोकोपकारी कार्यों में धन खर्च करने वाले को अनेक यज्ञों और उपासना का पुण्य प्राप्त होता है। वृक्ष लगाने वाले की कीर्ति भी लोक-परलोक में बनी रहती है। चूंकि वृक्ष अपने फूलों से देवताओं की, फलों से पितरों, निरीह पशु-पक्षियों और रोगियों को तृप्त करते हैं तथा अपनी छाया से यात्रियों की सेवा करते हैं। अतः पौधरोपण पर खर्च किया गया धन सार्थक और पुण्यदायक है।

पुनर्गठन से परे

सोमवार को आठ मंत्रियों के शपथ ग्रहण के साथ ही जम्मू-कश्मीर में महबूबा मंत्रिमंडल के पुनर्गठन का काम पूरा हुआ। सरकार में भागीदार दोनों पार्टियों ने इसे सामान्य प्रक्रिया बताने की चाहे जितनी भी कोशिश की हो, परदे के पीछे दोनों के बीच बढ़ते तनाव को छुपाना मुमकिन नहीं है। इस तनाव की पृष्ठभूमि पिछले विधानसभा चुनावों के पहले ही बन चुकी थी, जब पीडीपी और बीजेपी एक-दूसरे की धुर विरोधी के रूप में चुनाव मैदान में उतरी थीं। इसके बावजूद दोनों पक्ष समझदारी और उदारता दिखाते तो उनकी निकटता राज्य में शांति और समृद्धि का नया दौर लेकर आ सकती थी।

केंद्र की सत्ता में होने की वजह से इस मोर्चे पर ज्यादा जिम्मेदारी दिखाने की अपेक्षा बीजेपी से की जा रही थी, लेकिन वह इसमें बुरी तरह नाकाम रही। हाल ही में कठुआ गैंगरेप मामले में उसके नेताओं और दो मंत्रियों ने जिस तरह हिंदू एकता मंच के बैनर तले आरोपियों के पक्ष में गोलबंदी की, उससे दुनिया भर में पार्टी की फजीहत हुई।

प्रधानमंत्री के दखल के बाद दोनों मंत्रियों ने पद से इस्तीफा दिया, लेकिन बीजेपी के नेता अब भी यह समझाने की पूरी कोशिश कर रहे हैं कि इस पुनर्गठन का कठुआ मामले से कोई संबंध नहीं है। उनके मुताबिक सरकार के तीन साल पूरे होने के मौके पर यह बदलाव किया गया है। महत्वपूर्ण यह भी है कि दोनों विवादित मंत्रियों को भले बाहर रखा गया हो, पर कठुआ के विधायक राजीव जसरोटिया को मंत्रिमंडल में शामिल कर लिया गया है। ध्यान रहे, जिस सभा में भागीदारी की वजह से दो मंत्री इस्तीफा देने को मजबूर हुए थे, उसमें जसरोटिया भी शामिल थे। जाहिर है, बीजेपी प्रदेश में अपनी हिंदुत्ववादी राजनीति की जमीन कमजोर नहीं होने देना चाहती। मगर केंद्र में राज कर रही पार्टी के सामने जम्मू-कश्मीर में मुख्य चुनौती यह नहीं है कि वहां वह कितनी सीटें जीतती है। वहां मुख्य सवाल यही है और आगे भी रहने वाला है कि मुख्यधारा की ओर से उठाए गए किसी भी राजनीतिक कदम से राज्य के लोगों का भारत से लगाव कम होता है या बढ़ता है। तमाम उतार-चढ़ावों के बावजूद जम्मू की मुस्लिम आबादी कश्मीर घाटी पर प्रभावी अलगाववादी अजेंडे का हिस्सा अभी तक नहीं बनी थी। राजनीति के नए चलन के दबाव में उसका जम्मूवासी से कहीं ज्यादा मुस्लिम की तरह सोचना देश का स्थायी नुकसान माना जाएगा।

वास्तु टिप्स

पर्स में नहीं रखें यह चीजें बढ़ती है धन की परेशानी

पर्स का संबंध धन है न कि कागजातों से। इसलिए अपने पर्स में धन रखें। बहुत से लोग पुराने रसीद, बिल भी पर्स में रखे रहते हैं। इनसे पर्स में धन का ठहराव कम हो जाता है। ज्योतिषशास्त्र के अनुसार पुराने कागजात और रद्दियों पर राहु का प्रभाव होता है इसलिए इन्हें पर्स में जमा करके न रखें। खाने पीने की चीजें जैसे चॉकलेट, टॉफी, पान मसाला अपने पर्स में नहीं रखें। पर्स में दवाईयां, कैप्सूल, टेबलेट रखना भी धन के लिए अशुभ होता है। वास्तु विज्ञान के अनुसार यह नकारात्मक उर्जा बढ़ाने का काम करते हैं। वॉलेट में लोहे की वस्तुएं जैसे चाकू, ब्लेड नहीं रखें। ज्योतिषशास्त्र के अनुसार तांबे, चांदी की चीजें वॉलेट में रखना लाभप्रद होता है।

बदलती हुई कांग्रेस

कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी ने पार्टी में नई चमक लाने की कोशिश शुरू कर दी है। वे पार्टी संगठन में बदलाव कर रहे हैं और ज्यादा से ज्यादा युवाओं को जिम्मेदारी दे रहे हैं। अलग-अलग राज्यों के वरिष्ठ पदाधिकारियों के दफ्तरों में उनके सहायकों के रूप में 44 में से 30 नए सचिव चुने गए हैं। कहा जा रहा है कि करीब 70 युवा नेताओं की फेहरिस्त ऐसी ही सेवाओं के लिए तैयार कर ली गई है।

कई राज्यों में नए नेताओं को अहम जवाबदेही सौंपी गई है। कांग्रेस की इस बात के लिए अक्सर आलोचना होती रही है कि पार्टी संगठन में जड़ता आ गई है। उसमें ऐसे लोगों की कमी हो गई है जो नए जोश के साथ काम कर सकें। राहुल गांधी जब कांग्रेस में पहली बार सक्रिय हुए तो उन्होंने कई युवा नेताओं को संगठन में जगह दी थी। हालांकि यह प्रक्रिया जोर नहीं पकड़ पाई। कांग्रेस एक उलझन में पड़ी रही। शायद इस बात की हिचक रही कि ऊपर से नीचे तक एकबारगी बदलाव से वरिष्ठ नेताओं में नाराजगी आ सकती है और एक अंदरूनी टकराव की स्थिति पैदा हो सकती है।

राजीव गांधी के दौर में ऐसे हालात से पार्टी को गुजरना पड़ा था, तब कई सीनियर लीडर ने अपनी अलग राह पकड़ ली थी। शायद इसलिए राहुल गांधी ने अपने कदम धीमे कर लिए, लेकिन पार्टी की कमान आने के बाद वह युवाओं को आगे लाने के अपने अजेंडे पर दृढ़तापूर्वक लौट आए हैं। उन्होंने कांग्रेस के महाधिवेशन में इसके संकेत दे दिए थे। तब पार्टी के बुजुर्ग नेताओं को मंच के बजाय सामने कुर्सियों पर बिठाया गया था। राहुल गांधी ने कहा था कि मंच युवाओं के लिए खाली किया गया है। अपने भाषण में उन्होंने दोहराया कि पार्टी नेताओं और कार्यकर्ताओं के बीच खड़ी दीवार को गिराना और पीछे बैठे लोगों को सामने की पक्ति में लाना उनकी प्राथमिकता है। अब राहुल अपने हिसाब से संगठन को एक नया रूप दे रहे हैं। वह महसूस कर रहे हैं कि बदलते दौर में पार्टी के शीर्ष नेतृत्व को अपनी शैली बदलनी ही होगी। उसे हर चीज थोपने की आदत से परहेज करना होगा। इसलिए पंजाब में कैप्टन अमरिंदर सिंह को कमान दी गई, उनको स्वतंत्रता दी गई।

कर्नाटक में भी सिद्धारमैया को अहम निर्णय लेने की छूट दी गई। उनकी सलाह पर अमल किया गया। अशोक गहलोत और गुलाम नबी आजाद जैसे नेताओं को भी अहम जिम्मेदारी दी गई है। राहुल गांधी के अपने-अपने समुदायों में पकड़ रखने वाले जिग्नेश मेवानी और हार्दिक पटेल जैसे नेताओं से मिलने का पॉजिटव संदेश गया है। कांग्रेस में ऐसे नेताओं को बढ़ावा देने की जरूरत है, जो जमीनी स्तर पर कार्य कर सकें और जनता से संवाद कायम कर सकें। इसलिए जो युवा पार्टी से जुड़ रहे हैं, उनकी बातें सुनी जाएं और उन्हें स्वतंत्र रूप से कार्य करने दिया जाए।

खाना-खजाना

मजे से खाए और खिलाएं कुरकुरे पालक वड़ा

सामग्रीः

पालक- 300 ग्राम
गेहूं का आटा- 80 ग्राम
बेसन- 40 टीस्पून
सूजी- 40 ग्राम
अदरक- 2 टीस्पून
लहसुन- 2 टीस्पून
हरी मिर्च- 1 1/2 टेबलस्पून
जीरा- 1 टीस्पून
हल्दी- 1/2 टीस्पून
बेकिंग सोडा- 1/2 टीस्पून
नमक- 1 टीस्पून
काली मिर्च पाउडर- 1 टीस्पून
धनिया- 2 टेबलस्पून
नींबू का रस- 1 टेबलस्पून
ताजा क्रीम- 1 टेबलस्पून
तेल- 2 टेबलस्पून
पानी- 50 मिलीलीटर

विधिः

1. एक बाउल में सारी सामग्री को डालकर अच्छी तरह मिक्स कर लें।
2. अच्छी तरह मिक्स करने के बाद इसमें से कुछ मिक्चर को हाथ में लेकर इसे टिक्की की शेप दें।
3. अब इसे स्ट्रीम देने के लिए 20 मिनट तक स्ट्रीमर में रख दें।
4. आपके स्ट्रीम पालक वड़ा बनकर तैयार हैं। अब आप इसे कैचअप के साथ गर्मा-गर्म सर्व करें।